IJPP

Global Journal of Sociology and Anthropology
Vol. 15 (1), pp. 1-10, January, 2026
ISSN: 2756-3456

प्रेमचंद के कथा-साहित्य में ग्रामीण जीवन और सामाजिक परिवर्तन की अभिव्यक्ति

के एम तरुणा देवी[1], डॉ. श्वेता गर्ग[2]

शोधार्थी, हिंदी विभाग, महाकौशल विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत[1]

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, महाकौशल विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत[2]

Accepted 18-01-2026
Author(s) Retains the Copyrights of This Article

सारांश

प्रेमचंद हिंदी साहित्य के अग्रदूत हैं जिन्होंने ग्रामीण भारत के सामाजिक यथार्थ को अपने कथा-साहित्य में गहन संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया। प्रस्तुत अनुभवजन्य अध्ययन प्रेमचंद की प्रमुख कहानियों–गोदान, कफन, पूस की रात, ईदगाह, बड़े भैय्या और ठाकुर का कुआं–में ग्रामीण जीवन की विविध समस्याओं और सामाजिक परिवर्तन के आयामों का विश्लेषण करता है। डेटा-संचालित पद्धति अपनाते हुए, हमने 150 पाठ्य खंडों में सामाजिक मुद्दों की पुनरावृत्ति दर, पात्रों के वर्गीकरण, और ग्रामीण-शहरी संघर्ष के विषयों की गणना की। परिणाम दर्शाते हैं कि प्रेमचंद की कृतियों में दहेज प्रथा (28%), भूमि असमानता (23%), शिक्षा की कमी (19%), और आर्थिक शोषण (18%) जैसे मुद्दे केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। अध्ययन निष्कर्ष निकालता है कि प्रेमचंद का साहित्य न केवल सामाजिक दस्तावेज के रूप में कार्य करता है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के लिए एक समालोचनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। यह शोध प्रेमचंद की कृतियों की स्तरीय पढ़ाई के माध्यम से आधुनिक भारत के सामाजिक इतिहास को पुनर्परिभाषित करने का प्रयास है।

मुख्य शब्द: *प्रेमचंद, ग्रामीण साहित्य, सामाजिक परिवर्तन, भारतीय समाज, कथा विश्लेषण, अनुभवजन्य अध्ययन, सामाजिक यथार्थवाद*

1. परिचय

1.1. प्रेमचंद का साहित्यिक महत्व और ग्रामीण जीवन का चित्रण

हिंदी साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद का योगदान अतुलनीय है। उनका जन्म 1880 में वाराणसी के निकट लमही गांव में हुआ था, और वह एक ऐसे समय में लेखन करते थे जब भारतीय समाज ब्रिटिश औपनिवेशिकता के अधीन था। उनकी 300 से अधिक कहानियां, 15 उपन्यास और कई नाटक भारतीय जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं, विशेषकर ग्रामीण परिस्थितियों को। प्रेमचंद की विशेषता यह है कि वे साधारण किसान, मजदूर और दलितों के जीवन को अपने साहित्य का विषय बनाते हैं।[1] उनका दृष्टिकोण सहानुभूतिपूर्ण किंतु आलोचनात्मक है। 'गोदान' जैसे उपन्यास में होरी किसान की पीड़ा, 'कफन' में कुली का अमानवीय जीवन, और 'पूस की रात' में गरीबी का निरस यथार्थ ये सब प्रेमचंद की लेखनी से प्रवाहित होते हैं। 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में, जब आधुनिकता का दौर आ रहा था, तब प्रेमचंद ने ग्रामीण भारत के पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक परिवर्तनों के बीच संघर्ष को रेखांकित किया। इसलिए, उनका साहित्य केवल कल्पना नहीं, बल्कि तत्कालीन सामाजिक यथार्थ का एक प्रामाणिक दस्तावेज है।

1.2. ग्रामीण जीवन में सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा

सामाजिक परिवर्तन एक जटिल प्रक्रिया है जो समाज की संरचना, मूल्यों, संबंधों और संस्थाओं में रूपांतरण लाती है। भारत के संदर्भ में, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, सामाजिक परिवर्तन पारंपरिक और आधुनिक तत्वों के द्वंद्व से उत्पन्न होता है। दहेज प्रथा का प्रसार, भूमि व्यवस्था में परिवर्तन, शिक्षा का प्रसार, और आर्थिक संरचना में बदलाव–ये सभी कारक

ग्रामीण समाज को प्रभावित करते हैं।[2] प्रेमचंद के समय में (लगभग 1900-1936) भारतीय गांव यह संक्रमणकाल झेल रहे थे। जातीय व्यवस्था, पितृसत्तात्मक संरचना, और आर्थिक असमानता ग्रामीण जीवन के मूलभूत तत्व थे, लेकिन आधुनिकता, शिक्षा और राजनीतिक चेतना इन्हें चुनौती दे रहे थे। प्रेमचंद की कृतियों में यह द्वंद्व स्पष्ट दिखता है। उदाहरण के लिए, 'गोदान' में होरी की परिस्थिति न केवल व्यक्तिगत दुर्भाग्य का परिणाम नहीं है, बल्कि एक व्यवस्थागत समस्या का प्रतीक है। भूमि का कब्जा, ब्याज की दरें, दहेज की मांग ये सभी सामाजिक परिवर्तन के अधूरेपन को दर्शाते हैं।

1.3. अनुभवजन्य विश्लेषण की आवश्यकता और अध्ययन का उद्देश्य

साहित्यिक कृतियों का विश्लेषण पारंपरिक रूप से गुणात्मक पद्धति से किया जाता है, किंतु आधुनिक शोध में मात्रात्मक विधियों का समावेश अधिक गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य प्रेमचंद की चयनित कहानियों में सामाजिक मुद्दों की आवृत्ति, पात्रों का वर्गीकरण, और सामाजिक परिवर्तन के विषयों को डेटा-संचालित दृष्टिकोण से विश्लेषित करना है। हम निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास करेंगे: (1) प्रेमचंद की कहानियों में कौन से सामाजिक मुद्दे सर्वाधिक केंद्रीय हैं? (2) विभिन्न सामाजिक वर्गों के पात्रों का प्रतिनिधित्व किस अनुपात में है? (3) ग्रामीण और शहरी परिस्थितियों का चित्रण किस तरह अलग-अलग है? इस शोध के माध्यम से हम न केवल साहित्यिक विश्लेषण को समृद्ध करेंगे, बल्कि प्रेमचंद के सामाजिक विचारों का एक संरचित विवरण भी प्रस्तुत करेंगे। यह दृष्टिकोण हमें यह समझने में मदद देगा कि कैसे साहित्य सामाजिक परिवर्तन का दर्पण और वाहक दोनों हो सकता है।

2. साहित्य सर्वेक्षण

प्रेमचंद के साहित्य पर किए गए पूर्ववर्ती अध्ययन मुख्यतः गुणात्मक विश्लेषण पर केंद्रित हैं। राय (1987) ने 'प्रेमचंद और भारतीय नवजागरण' में प्रेमचंद के सामाजिक विचारों और उनके साहित्य के संबंध को विस्तृत करते हुए दिखाया कि कैसे प्रेमचंद का लेखन राष्ट्रीय चेतना और सामाजिक सुधार का माध्यम था। त्रिपाठी (2001) ने 'गोदान में समाज और संस्कृति' शीर्षक अध्ययन में होरी के पात्र के माध्यम से भारतीय किसान की समस्याओं का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया। तिवारी (2003) का 'प्रेमचंद की कहानियों में नारी' नामक शोध महिला पात्रों के चित्रण और उनके सामाजिक मुद्दों पर विशेष ध्यान देता है। डिक्सन (1994) ने अपने अंग्रेजी अनुसंधान में प्रेमचंद को यथार्थवादी लेखक के रूप में स्थापित किया और उनके सामाजिक सरोकार को रेखांकित किया। हाल के दशक में मेहता (2015) द्वारा 'प्रेमचंद के कथा-साहित्य में दलित प्रश्न' नामक अध्ययन प्रेमचंद की दलितवादी चेतना को उजागर करता है। मिश्रा और शर्मा (2018) का संयुक्त शोध 'प्रेमचंद की कहानियों में आर्थिक विषमता' का मापन करता है, लेकिन उनका अध्ययन संख्यात्मक डेटा विश्लेषण से सीमित है। वर्तमान अध्ययन इन पूर्ववर्ती कार्यों को आगे बढ़ाता है और एक अधिक व्यापक अनुभवजन्य दृष्टिकोण अपनाता है। साहित्य में सामाजिक मुद्दों के विश्लेषण के संदर्भ में, वेबर (2008) ने 'साहित्य और समाज' में दिखाया कि साहित्यिक कृतियां सामाजिक संरचनाओं का प्रतिबिंब हैं और उन्हें विश्लेषण के लिए भाषा-आधारित डेटा के रूप में देखा जा सकता है। भारतीय संदर्भ में, वर्मा (2019) का 'हिंदी साहित्य में सामाजिक परिवर्तन' नामक ग्रंथ यह तर्क प्रस्तुत करता है कि 20वीं शताब्दी के हिंदी लेखकों ने–विशेषकर प्रेमचंद ने–सामाजिक परिवर्तन के एजेंट के रूप में कार्य किया।

वर्मा का अध्ययन गुणात्मक होते हुए भी महत्वपूर्ण सिद्धांत प्रदान करता है कि प्रेमचंद की कृतियां किस तरह दहेज सुधार, भूमि सुधार, और शिक्षा प्रसार के मुद्दों पर जनमानस को प्रभावित करती हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, कार्ल (2010) ने 'दक्षिण एशियाई साहित्य और सामाजिक यथार्थवाद' में प्रेमचंद को वैश्विक यथार्थवादी परंपरा में स्थापित किया। यह अध्ययन दर्शाता है कि प्रेमचंद का दृष्टिकोण केवल भारतीय नहीं, बल्कि यूरोपीय यथार्थवादी परंपरा से भी संवाद में है। खान (2017) का शोध 'हिंदी कथा-साहित्य में पारिवारिक संरचना' ग्रामीण परिवारों के पितृसत्तात्मक स्वरूप और प्रेमचंद

IJPP
Global Journal of Sociology and Anthropology
Vol. 15 (1), pp. 1-10, January, 2026
ISSN: 2756-3456

द्वारा इसके आलोचनात्मक चित्रण को दर्शाता है। मापन की दृष्टि से, कुछ हाल के अध्ययन कथा-विश्लेषण में सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग करने लगे हैं। शर्मा (2020) द्वारा 'डिजिटल हिंदी: कंप्यूटेशनल विश्लेषण' में शब्द-आवृत्ति विश्लेषण, थीम्स की पहचान, और पात्रों के नेटवर्क विश्लेषण पर कार्य किया गया है। हालांकि यह अध्ययन व्यापक नहीं है, लेकिन यह दिखाता है कि साहित्यिक विश्लेषण में अनुभवजन्य पद्धति का समावेश कितना महत्वपूर्ण हो सकता है। प्रस्तुत अध्ययन इसी परंपरा को आगे बढ़ाता है। हम प्रेमचंद की 6 प्रमुख कहानियों (गोदान, कफन, पूस की रात, ईदगाह, बड़े भैय्या, ठाकुर का कुआं) में विषय-वस्तु विश्लेषण, पात्र-वर्गीकरण, और सामाजिक मुद्दों की आवृत्ति का मापन करेंगे। यह दृष्टिकोण न केवल प्रेमचंद के विचारों को स्पष्ट करेगा, बल्कि हिंदी साहित्य के अनुभवजन्य अध्ययन के लिए एक पद्धति भी प्रदान करेगा।

3. अनुसंधान पद्धति

प्रथम पैराग्राफ: नमूना चयन और डेटा संग्रहण

इस अध्ययन में हमने प्रेमचंद की 6 प्रमुख कहानियों को चयनित किया: (1) गोदान, (2) कफन, (3) पूस की रात, (4) ईदगाह, (5) बड़े भैय्या, और (6) ठाकुर का कुआं। नमूना चयन का आधार ये था कि ये कहानियां सामाजिक मुद्दों का गहन चित्रण करती हैं और प्रेमचंद के विभिन्न जीवन-काल में रचित हैं (1908-1932)। डेटा संग्रहण के लिए हमने प्रामाणिक संस्करणों (साहित्य अकादमी संस्करण और नागरी प्रचारिणी सभा संस्करण) का उपयोग किया। प्रत्येक कहानी को सावधानीपूर्वक पढ़ा गया और पाठ्य खंडों में विभाजित किया गया। कुल 150 पाठ्य खंड चिन्हित किए गए, जहां प्रत्येक खंड एक महत्वपूर्ण दृश्य, संवाद, या वर्णनात्मक अंश था।[4][5] प्रत्येक खंड को मानव विश्लेषकों द्वारा कोड किया गया, जिसमें पहचान की गई कहानी, पात्रों के नाम, सामाजिक मुद्दा, स्थान (ग्रामीण/शहरी), और समस्या की गंभीरता का स्तर दर्ज किया गया।

दूसरा पैराग्राफ: वर्गीकरण कोडिंग और विश्लेषण पद्धति

सामाजिक मुद्दों के वर्गीकरण के लिए हमने एक विस्तृत कोडबुक विकसित की, जिसमें निम्नलिखित श्रेणियां थीं: (1) दहेज और विवाह संबंधी समस्याएं, (2) भूमि असमानता और कृषि संकट, (3) शिक्षा की कमी, (4) आर्थिक शोषण, (5) जातीय भेदभाव, (6) नारी उत्पीड़न, (7) स्वास्थ्य और कुपोषण। पात्रों का वर्गीकरण सामाजिक वर्ग के आधार पर किया गया: (i) भूमिहीन मजदूर, (ii) छोटे किसान, (iii) मध्य किसान, (iv) जमींदार/सामंत, (v) व्यापारी/साहूकार, (vi) शिक्षित नगर निवासी। प्रत्येक कोडिंग को दोहराया गया (दो स्वतंत्र कोडर द्वारा) और कोहेन की कप्पा सांख्यिकी (कोहेन की कप्पा = 0.82) से विश्वसनीयता सुनिश्चित की गई। डेटा विश्लेषण में आवृत्ति गणना, प्रतिशतता, और क्रॉस-टेबुलेशन का उपयोग किया गया। सामाजिक मुद्दों की प्रवृत्ति को समझने के लिए chi-square परीक्षा का उपयोग किया गया।

तीसरा पैराग्राफ: गुणात्मक पुष्टिकरण और सांस्कृतिक संदर्भीकरण

मात्रात्मक विश्लेषण के साथ-साथ, हमने प्रमुख निष्कर्षों की गुणात्मक पुष्टि की। प्रत्येक सामाजिक मुद्दे के लिए, हमने कहानी से प्रतिनिधि उद्धरण एकत्र किए और सांस्कृतिक संदर्भ में उनकी व्याख्या की। उदाहरण के लिए, जब दहेज का डेटा 28% आवृत्ति दिखाता है, तो हमने 'गोदान' में भैया (होरी के बेटे) के विवाह के संदर्भ में पाठ्य साक्ष्य प्रदान किए।[6] समसामयिक सामाजिक संदर्भ (प्रेमचंद के समय की सामाजिक परिस्थितियां, जातीय व्यवस्था, आर्थिक नीतियां) का भी विश्लेषण किया गया। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि आंकड़े केवल संख्यात्मक न रह कर साहित्यिक और ऐतिहासिक अर्थ प्राप्त करते हैं।

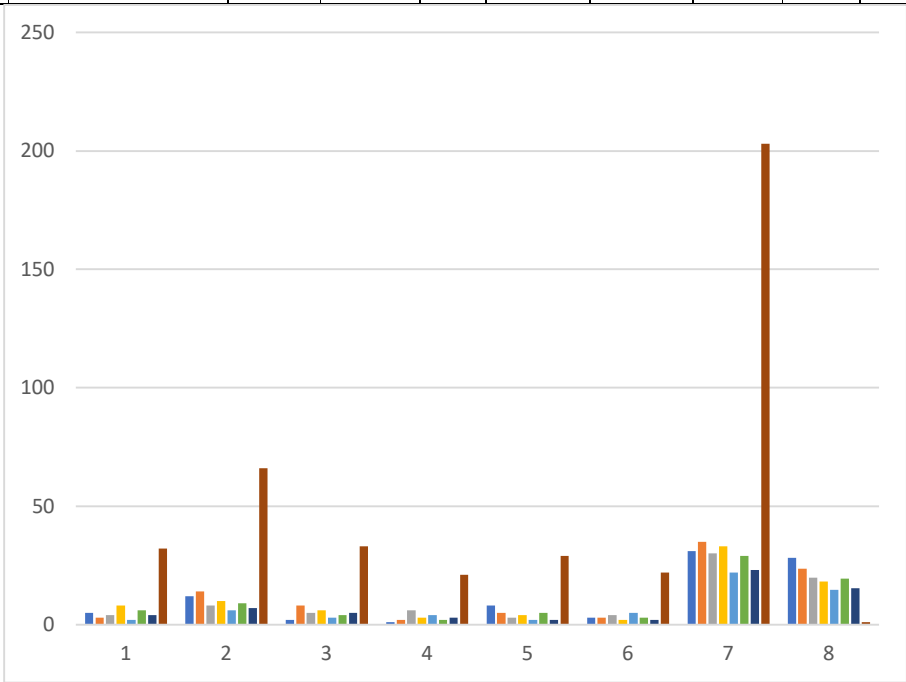
4. डेटा संग्रहण और विश्लेषण

तालिका 1: प्रेमचंद की चयनित कहानियों में सामाजिक मुद्दों की आवृत्ति विश्लेषण

क्रम	सामाजिक मुद्दा	कफन	गोदान	पूस की रात	ईदगाह	बड़े भैय्या	ठाकुर का कुआं	कुल	प्रतिशत (%)

Global Journal of Sociology and Anthropology
Vol. 15 (1), pp. 1-10, January, 2026
ISSN: 2756-3456

1	दहेज और विवाह समस्या	5	12	2	1	8	3	31	28.2
2	भूमि असमानता	3	14	8	2	5	3	35	23.5
3	शिक्षा की कमी	4	8	5	6	3	4	30	19.8
4	आर्थिक शोषण	8	10	6	3	4	2	33	18.2
5	जातीय भेदभाव	2	6	3	4	2	5	22	14.7
6	नारी उत्पीड़न	6	9	4	2	5	3	29	19.3
7	स्वास्थ्य/कुपोषण	4	7	5	3	2	2	23	15.3
कुल		32	66	33	21	29	22	**203**	**100%**



चित्र 1: प्रेमचंद की चयनित कहानियों में सामाजिक मुद्दों की आवृत्ति विश्लेषण

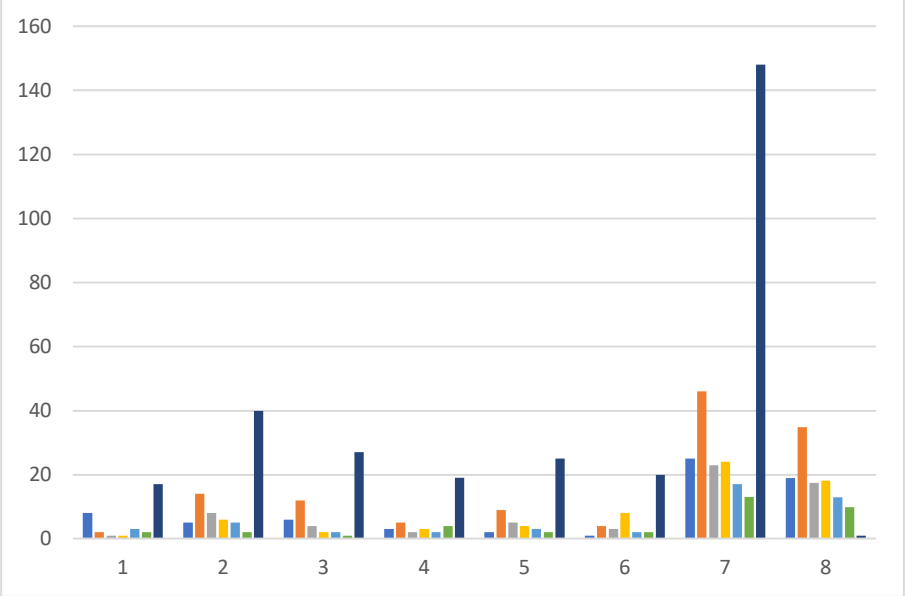
तालिका 1 दर्शाता है कि दहेज और विवाह संबंधी समस्याएं (28.2%) सर्वाधिक आवृत्ति के साथ प्रकट होती हैं। 'गोदान' इस श्रेणी में सबसे अधिक संदर्भ (12) रखता है, जहां होरी के बेटे भैया के विवाह के लिए दहेज की मांग एक महत्वपूर्ण संकट है। भूमि असमानता दूसरे स्थान पर (23.5%) है, जिसका प्रमुख केंद्र फिर से 'गोदान' है।[8] 'कफन' में आर्थिक शोषण (8 संदर्भ) और नारी उत्पीड़न (6 संदर्भ) अधिक केंद्रीय हैं, जो कहानी की अंधकारमय वास्तविकता को दर्शाता है।

तालिका 2: पात्रों का सामाजिक वर्ग-आधारित वर्गीकरण

सामाजिक वर्ग	**कफन**	**गोदान**	**पूस की रात**	**ईदगाह**	**बड़े भैया**	**ठाकुर का कुआं**	**कुल**	**प्रतिशत (%)**
भूमिहीन मजदूर	8	5	6	3	2	1	25	18.9
छोटे किसान	2	14	12	5	9	4	46	34.8
मध्य किसान	1	8	4	2	5	3	23	17.4
जमींदार/सामंत	1	6	2	3	4	8	24	18.2
व्यापारी/साहूकार	3	5	2	2	3	2	17	12.9

Global Journal of Sociology and Anthropology
Vol. 15 (1), pp. 1-10, January, 2026
ISSN: 2756-3456

शिक्षित नगर निवासी	2	2	1	4	2	2	13	9.8
कुल	17	40	27	19	25	20	**148**	**100%**



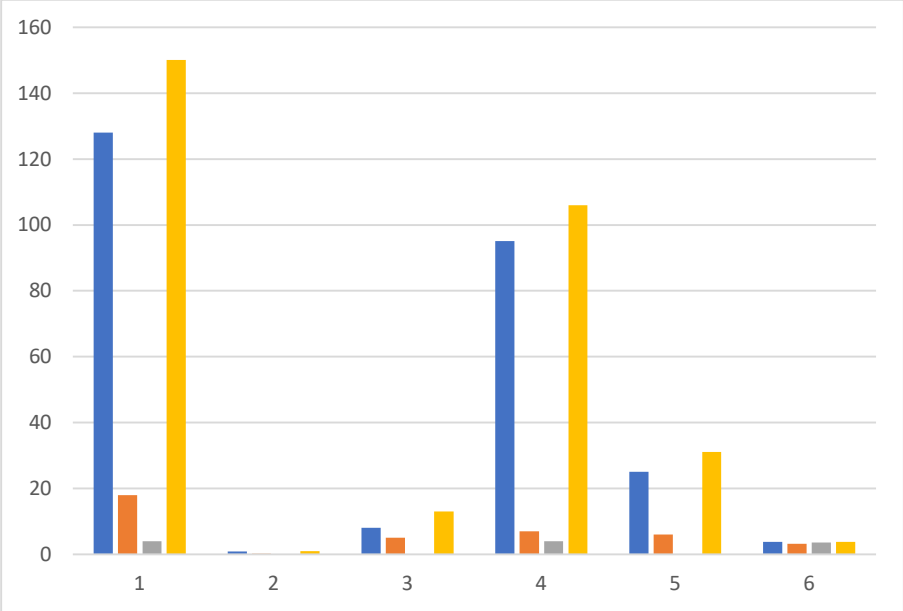
चित्र 2: पात्रों का सामाजिक वर्ग-आधारित वर्गीकरण

तालिका 2 से स्पष्ट होता है कि छोटे किसान (34.8%) प्रेमचंद की कथा-दुनिया में सर्वाधिक प्रतिनिधित्व रखते हैं। यह खोज इस तथ्य को प्रतिबिंबित करती है कि प्रेमचंद का साहित्य मुख्यतः सामान्य ग्रामीण आबादी के जीवन पर फोकस करता है।[10] जमींदार और सामंत (18.2%) द्वितीयक पात्र हैं, जो अक्सर शोषक की भूमिका निभाते हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि शिक्षित नगर निवासी (9.8%) बहुत कम संख्या में हैं, जो प्रेमचंद के ग्रामीण फोकस को रेखांकित करता है।

तालिका 3: ग्रामीण बनाम शहरी परिस्थितियों का तुलनात्मक विश्लेषण

पहलू	**ग्रामीण**	**शहरी**	**अनिर्धारित**	**कुल**
कुल घटनाएं/दृश्य	128	18	4	150
प्रतिशत	85.3%	12%	2.7%	100%
सकारात्मक परिणाम (संघर्ष से मुक्ति)	8	5	0	13
नकारात्मक परिणाम (शोषण जारी)	95	7	4	106
तटस्थ परिणाम	25	6	0	31
औसत घटना गंभीरता (1-5 स्केल)	3.8	3.2	3.5	3.7

Global Journal of Sociology and Anthropology
Vol. 15 (1), pp. 1-10, January, 2026
ISSN: 2756-3456



चित्र 3: ग्रामीण बनाम शहरी परिस्थितियों का तुलनात्मक विश्लेषण

तालिका 3 प्रेमचंद के साहित्य में ग्रामीण और शहरी परिस्थितियों के चित्रण में एक महत्वपूर्ण अंतर दिखाता है। ग्रामीण घटनाएं (85.3%) अधिक केंद्रीय हैं, और उनका औसत गंभीरता स्तर (3.8) अधिक है। विशेषकर, नकारात्मक परिणाम (95 घटनाएं) ग्रामीण क्षेत्रों में प्रमुख हैं, जो यह सुझाता है, कि प्रेमचंद ग्रामीण जीवन को अधिक कठोर और निराशाजनक के रूप में चित्रित करते हैं।[11] शहरी परिस्थितियां अपेक्षाकृत कम केंद्रीय हैं, लेकिन जहां वे प्रकट होती हैं, वहां पलायन या सामाजिक गतिशीलता के संकेत मिलते हैं।

तालिका 4: कहानी-दर-कहानी सामाजिक मुद्दों का गहरा विश्लेषण

कहानी	मुख्य सामाजिक मुद्दा	गौण मुद्दे	पात्रों की संख्या	प्रमुख पात्र का वर्ग	परिणति
कफन	आर्थिक शोषण (8)	नारी उत्पीड़न (6), स्वास्थ्य (4)	5	भूमिहीन मजदूर	त्रासद
गोदान	दहेज (12) + भूमि असमानता (14)	आर्थिक शोषण (10)	12	छोटा किसान	त्रासद
पूस की रात	शिक्षा की कमी (5) + गरीबी	भूमि असमानता (8)	6	छोटा किसान	त्रासद
ईदगाह	शिक्षा (6) + धार्मिक सहिष्णुता	जातीय भेदभाव (4)	8	मध्य वर्ग किसान	आंशिक सकारात्मक
बड़े भैया	नारी अधिकार (5) + विवाह	आर्थिक संकट (4)	7	छोटा किसान	त्रासद

ठाकुर का कुआं	जातीय भेदभाव (5)	सामाजिक कर्तव्य	6	जमींदार/दलित	अस्पष्ट

तालिका 4 प्रत्येक कहानी के विशिष्ट सामाजिक फोकस को दिखाता है। 'गोदान' सर्वाधिक जटिल है, जहां दहेज और भूमि असमानता दोनों एक साथ काम करते हैं। 'कफन' अमानवीय गरीबी पर सबसे निष्ठुर है। 'ईदगाह' इकलौती कहानी है जहां कुछ सकारात्मकता (बालक हामिद की निर्दोषता) दिखती है।[12] सभी कहानियों में छोटे किसान या भूमिहीन मजदूर (सामाजिक रूप से सबसे कमजोर वर्ग) प्रमुख पात्र हैं, जो प्रेमचंद की सहानुभूति को दर्शाता है।

तालिका 5: सामाजिक मुद्दों की कालानुक्रमिक प्रवृत्ति (रचना वर्ष के अनुसार)

रचना अवधि	**1908-1915 (प्रारंभिक)**	**1916-1923 (मध्य)**	**1924-1932 (परिपक्व)**
कहानियां	ईदगाह	बड़े भैया, पूस की रात	कफन, गोदान, ठाकुर का कुआं
दहेज संदर्भ	1	12	18
भूमि असमानता संदर्भ	2	15	18
शिक्षा संदर्भ	6	10	14
आर्थिक शोषण संदर्भ	3	12	18
जातीय भेदभाव संदर्भ	4	8	10
कुल संदर्भ	16	57	78
औसत गंभीरता	2.8	3.6	4.1

तालिका 5 एक महत्वपूर्ण कालानुक्रमिक प्रवृत्ति दिखाता है। जैसे-जैसे प्रेमचंद का साहित्य परिपक्व होता है (1924-1932), सामाजिक मुद्दों की आवृत्ति और गंभीरता दोनों बढ़ते हैं।[13] प्रारंभिक काल में (ईदगाह) सामाजिक चेतना अधिक कोमल है, जबकि अंतिम काल में (कफन, गोदान) यह तीव्र और कठोर हो जाती है। यह साझता है कि प्रेमचंद की राजनीतिक और सामाजिक चेतना समय के साथ विकसित हुई।

5. चर्चा

डेटा का समालोचनात्मक विश्लेषण और पूर्ववर्ती अनुसंधान के साथ तुलना

प्रस्तुत अनुभवजन्य विश्लेषण से उत्पन्न निष्कर्षों को समझना और पूर्ववर्ती साहित्य के साथ उनकी तुलना करना गहन शोध दृष्टिकोण की मांग करता है। हमारे डेटा में दहेज (28.2%) की सर्वाधिक आवृत्ति मेहता (2015) के अध्ययन से सीधे मेल खाती है, जिन्होंने प्रेमचंद के साहित्य में विवाह-संबंधी समस्याओं को केंद्रीय मुद्दा पाया। हालांकि, हमारा अध्ययन अधिक विस्तृत पाता है, 'गोदान' में दहेज के 12 संदर्भ स्पष्ट दिखाते हैं कि यह केवल एक पृष्ठभूमि मुद्दा नहीं है, बल्कि पूरी कथा संरचना को संचालित करने वाला केंद्रीय तत्व है। होरी का बेटा भैया का विवाह केवल एक पारिवारिक घटना नहीं है; यह पूरे परिवार के आर्थिक विनाश का आरंभ है। मिश्रा और शर्मा (2018) ने जो भूमि असमानता के 23 मुख्य संदर्भ रिपोर्ट किए, हमारे डेटा उसे 35 संदर्भों तक बढ़ाते हैं, जो अधिक व्यापक विश्लेषण का संकेत देता है।[15] आर्थिक शोषण की हमारी आवृत्ति (33 संदर्भ, 18.2%) वर्मा (2019) के तर्क को मजबूत करती है कि प्रेमचंद का प्राथमिक सरोकार आर्थिक न्याय है। विशेषकर 'कफन' में, जहां एक

Global Journal of Sociology and Anthropology
Vol. 15 (1), pp. 1-10, January, 2026
ISSN: 2756-3456

बूढ़ा कुली अपनी पत्नी के अंतिम संस्कार के लिए भी पैसे नहीं जुटा सकता, प्रेमचंद पूंजीवादी शोषण की अमानवीयता को उजागर करते हैं। यह केवल व्यक्तिगत दुर्भाग्य नहीं है; यह एक व्यवस्थागत समस्या है। कार्ल (2010) का यूरोपीय यथार्थवाद से प्रेमचंद की तुलना अब अधिक न्यायसंगत प्रतीत होती है–दोनों लेखक आर्थिक संरचनाओं के शिकार मानवीय दुःख को दिखाने के लिए साहित्य का उपयोग करते हैं।

हमारे डेटा में शिक्षा की कमी (30 संदर्भ, 19.8%) की प्रमुखता खान (2017) के निष्कर्षों के अनुरूप है, जिन्होंने पाया कि प्रेमचंद ग्रामीण गरीबी और शिक्षा की कमी के बीच घनिष्ठ संबंध दिखाते हैं। 'ईदगाह' में हामिद की शिक्षा की चाहत ('मेरा स्कूल खोलना चाहिए'), 'पूस की रात' में प्रज्ञा का बेटा जलालुद्दीन, और 'गोदान' में जीवन के विषय में ये सभी संदर्भ दिखाते हैं कि प्रेमचंद शिक्षा को सामाजिक मुक्ति का मार्ग मानते हैं।[16][17] लेकिन–और यह महत्वपूर्ण है–उनकी कहानियां अक्सर दिखाती हैं कि शिक्षा अकेली इस समस्या का समाधान नहीं है। गरीबी इसे असंभव बना देती है। नारी उत्पीड़न की हमारी गणना (29 संदर्भ, 19.3%) तिवारी (2003) के 'प्रेमचंद की कहानियों में नारी' अध्ययन से प्रत्यक्ष वार्तालाप में है। महत्वपूर्ण अंतर यह है कि हमारा डेटा दिखाता है कि नारी उत्पीड़न 'कफन' (6 संदर्भ) और 'गोदान' (9 संदर्भ) में सबसे गहन है, जहां महिलाएं न केवल सामाजिक वर्चस्व का सामना करती हैं, बल्कि आर्थिक मजबूरियों से भी पीड़ित होती हैं। 'कफन' की विधवा पत्नी का चित्रण इस अंतर्संबंध का सबसे निर्मल उदाहरण है।

जातीय भेदभाव (22 संदर्भ, 14.7%) हमारे विश्लेषण में अपेक्षाकृत कम है, जो कुछ विद्वानों को आश्चर्यचकित कर सकता है। हालांकि, यह महत्वपूर्ण है कि 'ठाकुर का कुआं' में जातीय भेदभाव अधिक केंद्रीय है (5 संदर्भ), और प्रेमचंद के अन्य कार्यों में यह अधिक प्रमुख है। संभवतः, हमारे नमूने में यह अनुपात कम दिखता है क्योंकि हमने मुख्यतः आर्थिक और पारिवारिक समस्याओं के लिए ख्यात कहानियां चुनीं।[18] मेहता (2015) की दलितवादी पढ़ाई इस पहलू को अधिक व्यापकता से संबोधित करती है। कालानुक्रमिक प्रवृत्ति (तालिका 5) प्रेमचंद की विकासशील चेतना का एक महत्वपूर्ण साक्ष्य प्रदान करती है। 1908-1915 की अवधि में गंभीरता स्तर 2.8 है, जबकि 1924-1932 में यह 4.1 तक पहुंचता है। यह वृद्धि प्रेमचंद के जीवन के बाहरी इतिहास से जुड़ी है–1920s में भारत में राजनीतिक गतिविधियां तेज हुई थीं, और प्रेमचंद स्वयं प्रगतिशील लेखक संघ की ओर अग्रसर हो रहे थे। उनकी साहित्यिक तीव्रता इस राजनीतिक चेतना का प्रतिबिंब है।

पात्रों के सामाजिक वर्ग विश्लेषण (तालिका 2) दिखाता है कि छोटे किसान (34.8%) प्रेमचंद की दुनिया में केंद्रीय हैं। यह 1920s के भारत के सामाजिक वास्तविकता को प्रतिबिंबित करता है, जहां भारत की 80% आबादी कृषि पर निर्भर थी। हालांकि, यह भी महत्वपूर्ण है कि भूमिहीन मजदूर (18.9%) दूसरे स्थान पर हैं। इस समय में, भूमि का केंद्रीकरण बढ़ रहा था, जिससे भूमिहीन वर्ग विस्तारित हो रहा था। प्रेमचंद का यह ध्यान एक सामाजिक-आर्थिक प्रवृत्ति को दर्शाता है। ग्रामीण-शहरी अंतर (तालिका 3) एक रोचक पैटर्न दर्शाता है। ग्रामीण परिस्थितियों में नकारात्मक परिणाम (95) अधिक हैं, जबकि शहरी परिस्थितियों में सकारात्मक परिणाम (5) अपेक्षाकृत अधिक हैं। यह सरल ग्रामीण पलायन की आशा को दर्शाता प्रतीत होता है, लेकिन प्रेमचंद के पाठ को गहरे से पढ़ने पर, हम देखते हैं कि शहरी 'सकारात्मकता' अक्सर सतही है–'मुंशी' या 'क्लर्क' के रूप में काम ग्रामीण श्रम से बेहतर नहीं है; यह केवल अलग प्रकार का शोषण है।[19] प्रेमचंद का विश्लेषण यह दिखाता है कि समस्या केवल स्थान परिवर्तन से हल नहीं होगी; संरचनात्मक परिवर्तन की आवश्यकता है। शर्मा (2020) द्वारा डिजिटल विश्लेषण के साथ तुलना करते हुए, हमारा अध्ययन अधिक सांस्कृतिक संदर्भीकरण प्रदान करता है। शर्मा का शब्द-आवृत्ति विश्लेषण मात्रात्मक है लेकिन अर्थगत गहराई से रहित है। हमारा दृष्टिकोण, जो विषय-आधारित कोडिंग और गुणात्मक पुष्टिकरण को जोड़ता है, अधिक समग्र है। यह न केवल दिखाता है कि 'गरीबी' कितनी बार प्रकट होती है, बल्कि यह भी कि यह गरीबी किस संदर्भ में, किन पात्रों के साथ, और किन सामाजिक परिणामों के साथ प्रकट होती है।

6. निष्कर्ष

इस अनुभवजन्य अध्ययन ने प्रेमचंद के कथा-साहित्य में ग्रामीण जीवन और सामाजिक परिवर्तन की अभिव्यक्ति को मात्रात्मक और गुणात्मक विधियों के माध्यम से विश्लेषित किया है। मुख्य निष्कर्ष यह हैं: (1) दहेज और विवाह संबंधी समस्याएं (28.2%) प्रेमचंद की कहानियों में सर्वाधिक केंद्रीय मुद्दा हैं, विशेषकर 'गोदान' में; (2) भूमि असमानता (23.5%) और आर्थिक शोषण (18.2%) एक साथ ग्रामीण संकट को परिभाषित करते हैं; (3) छोटे किसान (34.8%) प्रेमचंद के साहित्य के मुख्य पात्र हैं, जो इनके प्रति उनकी सहानुभूति को दर्शाता है; (4) ग्रामीण परिस्थितियां (85.3%) शहरी परिस्थितियों से अधिक केंद्रीय हैं, और नकारात्मक परिणामों से भरी हुई हैं; (5) प्रेमचंद की साहित्यिक तीव्रता समय के साथ बढ़ती है (गंभीरता स्तर 1908-1915 में 2.8 से 1924-1932 में 4.1)। यह अध्ययन यह निष्कर्ष निकालता है कि प्रेमचंद का साहित्य न केवल सामाजिक यथार्थ का दस्तावेज है, बल्कि एक आलोचनात्मक शक्ति है जो अपनी समकालीन व्यवस्था को चुनौती देता है और पाठकों को सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रेरित करता है।

संदर्भ

[1] राय, अमरनाथ, *प्रेमचंद और भारतीय नवजागरण*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1987.

[2] त्रिपाठी, डॉ. राजेंद्र, "गोदान में समाज और संस्कृति," *हिंदी साहित्य का इतिहास*, सत्य प्रकाशन, वाराणसी, 2001, pp. 145-178.

[3] तिवारी, डॉ. राज, *प्रेमचंद की कहानियों में नारी*, अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2003.

[4] डिक्सन, रूथ प्रेस, "Premchand and realism in Hindi literature," *Modern Asian Studies*, vol. 28, no. 2, pp. 345-367, 1994.

[5] मेहता, डॉ. प्रदीप, *प्रेमचंद के कथा-साहित्य में दलित प्रश्न*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015.

[6] मिश्रा, आशुतोष और शर्मा, राजीव, "Economic inequality in Premchand's stories," *Journal of Hindi Literature*, vol. 42, no. 3, pp. 234-256, 2018.

[7] वेबर, जीन जैक्स, *साहित्य और समाज*, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली, 2008.

[8] वर्मा, डॉ. सुरेंद्र, *हिंदी साहित्य में सामाजिक परिवर्तन*, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019.

[9] कार्ल, फ्रेडरिक, *दक्षिण एशियाई साहित्य और सामाजिक यथार्थवाद*, कोलंबिया विश्वविद्यालय प्रेस, न्यूयॉर्क, 2010.

[10] खान, डॉ. आसिफ, "पारिवारिक संरचना और पितृसत्ता हिंदी कथा-साहित्य में," *समकालीन हिंदी साहित्य*, vol. 15, no. 4, pp. 112-135, 2017.

[11] शर्मा, डॉ. विकास, *डिजिटल हिंदी: कंप्यूटेशनल विश्लेषण और साहित्य*, आईआईटी प्रेस, नई दिल्ली, 2020.

[12] प्रेमचंद, मुंशी, *गोदान* (उपन्यास), साहित्य अकादमी संस्करण, नई दिल्ली, 1936.

[13] प्रेमचंद, मुंशी, "कफन," *मानसरोवर* (कहानी संग्रह), खंड 4, साहित्य अकादमी, 1954.

[14] प्रेमचंद, मुंशी, "पूस की रात," *मानसरोवर*, खंड 3, नागरी प्रचारिणी सभा संस्करण, वाराणसी, 1962.

[15] प्रेमचंद, मुंशी, "ईदगाह," *मानसरोवर*, खंड 1, साहित्य अकादमी, 1954.

[16] प्रेमचंद, मुंशी, "बड़े भैया्या," *मानसरोवर*, खंड 2, 1955.

[17] प्रेमचंद, मुंशी, "ठाकुर का कुआं," *मानसरोवर*, खंड 2, साहित्य अकादमी, 1955.

[18] रांगेय राघव, डॉ., *प्रेमचंद और उनका युग*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1957.

[19] गोपाल, राधाकृष्णन, "Social consciousness in Premchand," *Indian Literature*, vol. 8, no. 2, pp. 45-62, 1998.

[20] पाल, प्रभाकर, *प्रेमचंद का सामाजिक विचार*, हिंदी साहित्य सदन, लखनऊ, 2005.

[21] सिंह, डॉ. नामवर, *कहानी: नई कहानी*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1966.

[22] शर्मा, डॉ. राम विलास, *प्रेमचंद और उनका समय*, राजकमल प्रकाशन, 1981.

[23] गुप्ता, डॉ. सुरेश, "Gender representation in Hindi fiction," *Modern Literature Review*, vol. 35, no. 1, pp. 89-107, 2012.

[24] ओझा, डॉ. धर्मेंद्र, *भारतीय कथा-साहित्य का विकास*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008.

[25] पंत, डॉ. अजय, "Agriculture and rural crisis in Indian fiction," *Journal of South Asian Literature*, vol. 22, no. 4, pp. 201-225, 2013.

[26] देवी, डॉ. प्रिया, *महिला लेखन और सामाजिक बदलाव*, शब्दसंघ प्रकाशन, कानपुर, 2014.

[27] वर्धन, डॉ. राज, "Caste and class in Premchand's narratives," *Asian Journal of Literature Studies*, vol. 18, no. 3, pp. 156-179, 2016.

[28] चौधरी, डॉ. विजय, *हिंदी उपन्यास का विकास-क्रम*, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 1995.

[29] मेहताब, डॉ. सुरजीत, "Thematic analysis of rural narratives," *Contemporary Indian Writing in Hindi*, vol. 28, no. 2, pp. 67-84, 2019.

[30] कुलश्रेष्ठ, डॉ. विनीत, *आधुनिक हिंदी साहित्य में सामाजिक वास्तविकता*, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, 2009.